सिंहस्थ - झूठ, फरेब एवं पाखंड का जमावड़ा

कृपया अपने मोहल्लेवासियों, मित्रों, सहयोगियों के मध्य एक छोटा सा सर्वेक्षण करें। सबसे पूछें कि क्या वे सिंहस्थ हेतु उज्जैन जाने वाले हैं या हो आए हैं। यदि आप सौ व्यक्तियों से यह प्रश्न पूछेगें तो पाँच–दस व्यक्ति भी हाँ नहीं कहेगें। लगभग नब्बे प्रतिशत हिंदुओं की सिहंस्थ में न कोई रूचि है न श्रद्धा। सच तो यह है कि आम हिन्दू यह कामना कर रहा है कि इस माह में उज्जैन का कोई काम नहीं निकलना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि मजबूरी में उज्जैन जाना पड़े और वहाँ जा कर पुलिस वालों की बदसलूकी का शिकार होना पड़े। इसीलिए आश्चर्य तब हुआ जब यह पढ़ा कि सिंहस्थ के प्रथम शाही स्नान में पच्चीस लाख लोगों ने क्षिप्रा में स्नान किया। कहा जा रहा है कि सिंहस्थ में कुल तीन से पाँच करोड़ के लगभग तीर्थयात्री आएंगे। अगर इन सरकारी दावों पर विश्वास किया जाए तो मध्यप्रदेश का हर दूसरा पुरुष, स्त्री एवं बच्चा सिंहस्थ में पहुँचेगा। स्पष्टतः सरकारी दावे आँकड़ों को कई गुना बढ़ाकर प्रस्तुत कर रहे हैं।

यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि सरकार को झूठ बोलने की ऐसी क्या मजबूरी है? इसका उत्तर बहुत साफ है। सिंहस्थ के नाम पर सरकार लगभग तीन सौ करोड़ रूपया खर्च करती है। इस राशि का एक अंश अधिकारियों एवं राजनेताओं की जेब में पहुँचता है। अतः अधिकारी एवं राजनेता यह सिद्ध करने का भरसक प्रयास करते हैं कि सिंहस्थ में धन व्यय करना सार्थक रहा। सार्थकता सिद्ध करने हेतु आंकड़ों की बाजीगरी की जाती है, झूठ का सहारा लिया जाता है, और तथाकथित साधु, संत, सन्यासियों के सम्मुख नतमस्तक भी होना पड़ता है।

सिंहस्थ में जिन भगवाधारी एवं दिगम्बरियों का मेला लगा है, उनमें से अधिकतर न तो साधु हैं, न संत, न सन्यासी। अपवादों को छोड़ क्षिप्रा के तट पर एकत्र यह समूह ढोंगियों, फरेबियों, पाखंडियों एवं अंधविश्वासियों का है। भगवा पहन कर, तन पर भभूत मल कर तथा रूद्राक्ष की मालाएँ पहन कर ये एक स्वांग रचते हैं। इस स्वांग से वे अपनी भोगी, कामुक, लालची, लालसापूर्ण प्रवृत्ति को छिपा कर भोली–भाली जनता को ठगते हैं। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि उनके इस स्वांग को बेनकाब करने के स्थान पर सरकार उनको सहयोग कर रही है।

 © All Rights Free

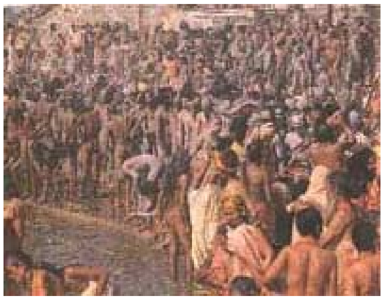

दुर्भाग्यपूर्ण विडम्बना यह भी है कि काँग्रेस एवं भाजपा, दोनों, के नेता अपनी–अपनी राजनैतिक विचारधारा को ताक पर रख कर भगवाधारी पाखंडियों के सम्मुख साष्टांग करने में व्यस्त हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में राष्ट्रीय चेतना के विकास का शुभारंभ स्वामी दयानंद सरस्वती एवं स्वामी विवेकानन्द ने किया था। दोनों ने मिलकर हिन्दू धर्म को पाखंड, रूढियों एवं अंधविश्वास से दूर कर एक प्रगतिवादी, राष्ट्रीय, आधुनिक स्वरूप प्रदान किया। दोनों का तत्कालीन शंकराचार्यों, मठों एवं अखाड़ों ने यथासंभव विरोध किया था। दोनों के अनुयायियों ने मिलकर हिन्दू महासभा का गठन किया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को वंदे मातरम एवं स्वदेशी का योगदान हिन्दू महासभा ने ही दिया था। हिन्दू महासभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जनसंघ से भाजपा तथा विश्व हिन्दू परिषद की लंबी यात्रा में स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानन्द, वीर सावरकर एवं डा० हेडगेवार का ओजस्वी, क्रांतिकारी, प्रगतिवादी, तर्क–आधारित हिन्दुत्व न जाने कहाँ खो गया है।

भविष्य के इतिहासज्ञ आँसुओं में कलम डुबोकर यह लिखेंगें कि स्वयं को दयानंद, विवेकानन्द एवं सावरकर के अनुयायी कहने वाले इतने बुद्धिविहीन थे कि उन्होंने प्रत्येक भगवा वस्त्र पहनने वाले के चरण धोए। एक ओर, वस्त्र के रंग के आधार पर पूजन करने वाले इन अनुयायियों ने स्वामी दयानंद एवं स्वामी विवेकानन्द के विराधियों को महिमामंडित किया, तो दूसरी ओर स्वयं को गाँधी एवं नेहरू का अनुयायी कहने वालों ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी। वैसे तो काँग्रेसी भाजपा पर भगवाकरण का आरोप लगाते रहे पर साथ ही काँग्रेसी नेता अखाड़ों एवं मठों में साष्टांग दण्डवत करने में भाजपाइयों को भी पछाड़ते रहे।

निश्चय ही भगवाधारियों के सम्मुख नेताओं के घुटने टेकने का प्रमुख कारण नेताओं की अपनी कमजोरियाँ हैं। आज भारतीय समाज में आस्था का संकट है। स्वतंत्रता के पूर्व एवं तत्काल बाद जनता की नेताओं में आस्था थी। तब नेता सम्मानसूचक सम्बोधन था, आज नेता शब्द एक गाली बन गया है। आज समाज आस्था के नये केन्द्रबिन्दु तलाश कर रहा है। पर इस तलाश हेतु वह सिंहस्थ जाने को तैयार नहीं है। सिंहस्थ के नाम पर जो झूठ, फरेब एवं पाखंड का जमावड़ा एकत्र हुआ है, वह तो केवल कुछ मुट्ठी भर लोगों को ही रास आ रहा है।

अनिल चावला

६ अप्रैल, २००४